'भारत में संसदीय लोकतंत्र तथा इसे सुदृढ़ बनाने में अनिवासी भारतीयों की भूमिका' विषय पर संबोधन

(वीडियो कांफ्रेंस नई दिल्ली से)

- इस विशिष्ट अवसर पर वीडियो कांफ्रेंस के माध्यम से आप सबसे जुड़कर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। कोरोना महामारी ने विश्व में त्रासदी तो उत्पन्न कर दी है लेकिन इसने हमें आपस में एक दूसरे से मिलने और विचारों के आदान प्रदान के नए माध्यम भी दिए हैं।
- अभी हम दुनिया के अलग अलग हिस्से में होते हुए भी वर्चुअल तकनीक के माध्यम से एक दूसरे से आसानी से विचार - विमर्श कर पा रहे हैं। मानव मस्तिष्क इस प्रकार की आपदा में भी अवसर खोज लेता है और सभ्यता आगे बढ़ती रहती है। मैं बिलकुल आश्वस्त हूँ कि इस महामारी से हम और मजबूत होकर निकलेंगे।
- अपने राज्य और अपनी संस्कृति के लोगों से मिलना सदैव सुखद अनुभव देता है। हमारे प्रदेश की सदियों से ही एक विशिष्ट पहचान रही है।
- रण के साथ-साथ रंग की साधना इस धरती की विशेषता रही है। राजस्थान की अद्भुत संस्कृति एवं गौरवशाली परंपराओं ने ही इसे भारतीय संस्कृति की बहुरंगी माला का मूल्यवान रत्न बना दिया है। राजस्थानी लोगों की यह विशेष बात है कि हम चाहे देश या विदेश के किसी कोने में भी रहें हम अपने खान-पान, पहनावे, परंपराओं और अपने रीति - रिवाजों को नहीं छोड़ते। यही कारण है कि हम जहां बस जाते हैं वहीं एक छोटा राजस्थान बन जाता है। यही हमारी विशेषता भी है और ताकत भी।
- राजस्थान अपने उदार आतिथ्य भाव के लिए सदा से प्रसिद्ध रहा है। 'पधारो म्हारे देश' एक लोकोक्ति बन गई है। यहां मैं आज यह जरूर कहूंगा कि हमारे प्रदेश के संस्कार और संस्कृति को दुनिया भर में ले जाने का श्रेय आप सभी लोगों को जाता है। राजस्थान के उन सभी निवासियों को यह श्रेय जाता है, जो बेशक अब राजस्थान में ना भी हों, पर राजस्थान उनके मन में और हृदय में बसता है।
- आज राजस्थान में पर्यटन और उद्योग के विकास की असीम संभावनाएं हैं। इन संभावनाओं को साकार करने में आपकी भूमिका महत्वपूर्ण है।
- अपनी उद्यमशीलता और संघर्ष करने की शक्ति ने आपको हर जगह सफलता दिलाई है। 'एक माटी - एक देश' की भावना आप सभी को दूर देश में भी अपने देशवासियों से जोड़ती है।
- हमारा देश चिर पुरातन सभ्यता का देश है। प्राचीन भारत ने विश्व को कई उपहार दिए हैं। इसमें से शायद सबसे अद्भुत लोकतंत्र का उपहार है। आप उस समय की कल्पना कीजिए जब लोकतंत्र की बुनियाद कभी भारत में रखी जा रही थी। हज़ारों वर्ष पहले भारत के पूर्वी कोने में स्थित लिच्छवी गणराज्य में लोग सम्मिलित रूप से निर्णय ले रहे थे। उन्हें यह एहसास भी नहीं रहा होगा कि वे जिस प्रणाली की नींव रख रहे हैं, एक समय आएगा जब वह प्रणाली विश्व भर में फैल जाएगी।

- मुझे इसमें रत्ती भर भी संदेह नहीं है कि आज विश्व में विकास का आधार लोकतंत्र ही है। यदि लोकतंत्र नहीं होता तो आर्थिक, राजनैतिक और सामाजिक विकास संभव नहीं था। सामाजिक न्याय की कल्पना लोकतंत्र के बिना नहीं की जा सकती।
- लोकतंत्र का मतलब सिर्फ यह नहीं है कि जनता द्वारा मत के अधिकार का प्रयोग करके सरकार बना दी जाती है। लोकतंत्र का मतलब मात्र यह नहीं है कि संसद द्वारा कुछ क़ानून पास कर दिए जाते हैं। लोकतंत्र का मतलब केवल यह नहीं होता कि कार्यपालिका विधायिका के प्रति उत्तरदायी होती है।
- लोकतंत्र का मतलब यह होता है कि पंक्ति के आखिर में खड़े व्यक्ति की भी आवाज उतनी ही प्रखर होती है, जितनी सबसे आगे खड़े व्यक्ति की। लोकतंत्र में सबके पास बराबर अधिकार हैं। लोकतंत्र में सबका साथ, सबका विकास और सबका विश्वास होता है। लोकतंत्र की अवधारणा 'बहुजन हिताय-बहुजन सुखाय' से जुडी हुई है।
- सदियों तक पराधीन रहने के बाद 1947 में भारत स्वतंत्र हुआ था। हम ताज़ा-ताज़ा विभाजन की विभीषिका से निकल कर आये थे। सैकड़ों वर्षों की गुलामी ने देश को आर्थिक रूप से खोखला कर दिया था। लेकिन इतनी समस्याओं, निर्धनता, पिछड़ेपन के बाद भी भारत एक इसलिए रह पाया, क्योंकि हमारे पास लोकतंत्र की विरासत थी। आपको याद होगा कि बहुत से देश जो हमारे साथ स्वतंत्र हुए थे, वहाँ लोकतंत्र की जड़ें नहीं जम पायी क्योंकि उनके पास लोकतंत्र की विरासत नहीं थी। इसी ताकत के सहारे हम मजबूती से आगे बढ़ते रहे हैं।
- वर्तमान सरकार ने हाल के कुछ वर्षों में राष्ट्र के लिए कुछ ऐतिहासिक निर्णय लिए हैं। उन निर्णयों से देश के विकास को सिर्फ नयी गति ही नहीं, बल्कि नयी दिशा भी मिली है। हम पांच ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने के लक्ष्य की तरफ बढ़ रहे हैं। पर हमारा सपना अभी और आगे जाने का है। हम तब तक नहीं रुकेंगे जब तक शिखर पर न पहुंच जाएँ।
- 2022 में भारत स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगांठ मनाएगा और हमारा प्रयास है कि यह समारोह संसद के नए भवन में आयोजित हो। यह एक नया भारत है और नया भारत किसी से पीछे नहीं है, न किसी के पीछे है। जब नीयत ठीक हो, नीति सही हो और नियम लोकतान्त्रिक हो, तो रास्ता आसान हो जाता है। हमने मतभेद को कभी मनभेद नहीं बनने दिया।
- हमने किसी भी वर्ग को - चाहे वह कितना भी वंचित हो या विकास के रास्ते में पीछे छूट गया हो, उसे कभी अहसास नहीं होने दिया कि वह मुख्य धारा में शामिल नहीं हो सकता। इसीलिए समान अवसर के संविधान प्रदत्त अधिकार को प्रयोग में भी लाया गया है। वंचित समाज को आगे लाने के लिए आरक्षण की व्यवस्था की गयी। समता, समानता और समरसता की भावना से हम आगे बढ़ते रहे।
- आज भारतवर्ष विश्व भर में अपनी पहचान बनाने में सफल हुआ है। अंतर्राष्ट्रीय संगठनों में हमारी साख बढ़ी है। यूएसए, इंग्लैंड, रूस, यूरोपीय समुदाय, ऑस्ट्रेलिया, जापान इत्यादि जैसे मित्र देशों के सहयोग से हम अंतर्राष्ट्रीय मंचों और संगठनों में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। चाहे जलवायु परिवर्तन हो, या नवीकरणीय ऊर्जा हो, मानव अधिकार हो - हर क्षेत्र में भारत की अग्रणी भूमिका है।
- दुनिया के सबसे बड़े कार्यशील लोकतंत्र होने के नाते पूरी दुनिया की नज़र भारत के संसदीय लोकतंत्र पर रहती है। आप सब अपने-अपने देश में रहते हुए भी भारतीय लोकतंत्र में अपनी भूमिका निभा सकते हैं। आज सूचना और संचार क्रान्ति ने भौतिक

दूरियों को मिटा दिया है। आप ओपिनियन मेकर के रूप में प्रबुद्ध जनता को अपने विचारों से अवगत करा सकते हैं। भारत में आप और कौन-कौन से सुधार देखना चाहते हैं, आपके सपनों का भारत कैसा हो, इस बारे में अपने सकारात्मक सुझाव और ब्लू प्रिंट आप साझा कर सकते हैं।

- आप सब एक महान विरासत के उत्तराधिकारी हैं। आप में एक गौरवशाली राष्ट्र का दिल है। बापू ने कहा था कि 'किसी राष्ट्र की संस्कृति उसके लोगों के दिल और आत्मा में वास करती है।' आप सब जितने भी NRI या भारतवंशी लोग हैं, वे बापू की उक्ति को चरितार्थ कर रहे हैं। भारतीय मूल के लोग चाहे वह किसी भी देश में बसे हों, कालान्तर में विशिष्ट समुदायों के रूप में उभर कर सामने आए हैं। आप सब भारत की सभी प्रकार की सांस्कृतिक, भाषाई और धार्मिक विविधताओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। आप सब हमारे मात्र सांस्कृतिक दूत ही नहीं हैं, बल्कि दूर रहते हुए भी भारत की जनता की प्रगति में भागीदार हैं। एक 'सम्मिलित भारत' जो हम सबका है, इस स्वप्न को साकार करने में भी आप सबकी साझेदारी है।

- भारत से बाहर गए लोगों ने विकास और समृद्धि का जो परचम लहराया है, उसे पूरी दुनिया के लोग विस्मय और प्रशंसा की दृष्टि से देख रहे हैं। इन्हीं लोगों ने समग्र रूप से भारत और भारतीयों को एक नई पहचान और प्रतिष्ठा दिलाई है। आप सबके सम्मिलित प्रयासों से ही गतिशील, जीवंत तथा उद्यमशील भारत की एक नई छवि उभर कर सामने आ रही है। आपके योगदान को मान्यता प्रदान करते हुए नागरिकता संशोधन अधिनियम 2003 के माध्यम से 16 विनिर्दिष्ट देशों में भारतीय मूल के लोगों को दोहरी नागरिकता प्रदान की गयी है।

अंत में, मैं आपसे यही कहना चाहूंगा कि भारतीय होने के नाते हमारी एक साझा विरासत है, एक साझा संस्कृति है। भारतीयता एक साझा बंधन है जो हमें जोड़ता भी है और मजबूत भी बनाता है। हमारा संकल्प सबको साथ लेकर चलने का है, सबके साथ चलने का है। यदि हम ऐसा कर पाए तो मेरा दृढ विश्वास है कि 21वीं सदी भारतवर्ष की सदी होगी। जय हिन्द।